

डॉ. गैरी मीडर्स, ईश्वर की इच्छा को जानना, सत्र 16, प्रमुख प्रतिस्पर्धी मॉडल, ब्लैकबी, स्मिथ और फ्राइसन

© 2024 गैरी मीडर्स और टेड हिल्डेब्रांट

आखिरी व्याख्यान, व्याख्यान 16, जीएम 16, में आपका स्वागत है, आपके नोट्स में। और आपको नोट्स की आवश्यकता होगी, और मैं आज ज्यादातर नोट पैक से काम करूंगा। वीडियो स्लाइड मूल रूप से हमें यहाँ ट्रैक पर रखती हैं।

और यह ईश्वर की इच्छा जानने के लिए बाइबिल धर्मशास्त्र का नोट पैक है, ईश्वर की इच्छा जानने के लिए लोकप्रिय विचार। मैं इसे वेड और वॉटिंग कहता हूँ। मैं इसे स्लाइड्स में परिशिष्ट कहता हूँ क्योंकि मुझे लगा कि आपके सामने अन्य विचार प्रस्तुत करना अच्छा होगा ताकि आप अपना खुद का शोध कर सकें।

मेरा दृष्टिकोण वास्तव में चौथा दृष्टिकोण है। जब तीन दृष्टिकोणों पर पुस्तक प्रकाशित हुई, तो किसी कारण से, संपादक ने, मुझे लगता है कि फ्रिसन के साथ मिलकर, यह निर्णय लिया कि मेरा दृष्टिकोण मूल रूप से फ्रिसन के दृष्टिकोण जैसा ही है। खैर, इस मामले में चर्च से कोई भी बात अलग नहीं हो सकती।

मुझे यकीन नहीं है कि उन्होंने मेरी सामग्री को ठीक से नहीं पढ़ा या समस्या क्या है, लेकिन मेरा दृष्टिकोण फ्राइसन से बहुत अलग है। मैं बस इन तीन दृष्टिकोणों का एक सिंहावलोकन देने जा रहा हूँ। मैं बहुत विस्तार में जाने की कोशिश नहीं करने जा रहा हूँ।

मेरा सुझाव है कि आप प्राथमिक पुस्तकें पढ़ें। मैं आपको द थ्री व्यूज़ नामक पुस्तक पढ़ने का सुझाव नहीं दूंगा। मुझे नहीं लगता कि यह उनके विचारों को पर्याप्त रूप से प्रस्तुत करती है।

निर्णय लेने और ईश्वर की इच्छा पर फ्राइसन का मूल प्रकाशन संभवतः उनका सबसे अच्छा प्रस्तुतीकरण था। जब उन्होंने अपनी 25वीं वर्षगांठ पर वॉल्यूम बनाया, तो मुझे लगा कि यह मूल संस्करण जितना शक्तिशाली नहीं था। इसलिए, मैं मूल संस्करण को पढ़ने की अत्यधिक अनुशंसा करता हूँ।

आप इसे शायद पुरानी किताबों और उस तरह की चीज़ों में पा सकते हैं। इसलिए, मैं आपको बस एक संक्षिप्त विवरण देने जा रहा हूँ। मैं इसे अपने नोट्स के संबंध में बहुत बारीकी से करने जा रहा हूँ।

मैं आपसे थोड़ा धैर्य रखने का अनुरोध करता हूँ। मेरी आँखों में परेशानी हो रही है, और मेरे पास कुछ रीडर हैं, लेकिन वे छोटे प्रिंट के साथ मेरी बहुत मदद नहीं करते हैं, और मुझे यह करना होगा। तो, अभी अपने नोट्स ले लो, और हम उस संबंध में आगे बढ़ेंगे।

लोकप्रिय विकल्प, तौले गए और अपर्याप्त पाए गए। मैं परिचय के बाद इस पर आऊंगा। कृपया अपने नोट्स के पेज एक पर ध्यान दें।

ईश्वर की इच्छा जानने के बारे में जितनी पुस्तकें हैं, उतने ही विचार हैं। हालाँकि, साहित्य का शरीर आमतौर पर तीन प्रमुख प्रतिमानों में आता है। हालाँकि हम सभी विकल्पों का प्रतिनिधित्व नहीं कर सकते, क्रिएगेल द्वारा प्रकाशित एक खंड उन तीन को देता है, और मैंने इसे यहाँ आपको दिया है, और यदि आप अन्य नहीं प्राप्त कर सकते हैं तो आप इसे प्राप्त कर सकते हैं।

ये तीनों विचार ब्लैकबी से लिए गए हैं, जो एक पिता-पुत्र की टीम है, जिसने एक ऐसी किताब लिखी जो बहुत लोकप्रिय रही, खास तौर पर दक्षिणी बैपटिस्ट चर्चों में। स्मिथ, जो वेस्लेयन परंपरा में हैं, और गैरी फ्राइसन, जो मुझे लगता है कि बाइबल चर्च के व्यक्ति हैं। इस प्रयुक्त पुस्तक का मूल्य यह है कि प्रत्येक लेखक दूसरे को प्रतिक्रिया देता है, इसलिए इसमें कुछ मूल्य है।

आपको उन तीनों के बीच बातचीत मिलती है। लेकिन मुझे लगता है कि मेरा चौथा दृष्टिकोण निश्चित, महत्वपूर्ण है, और मुझे लगता है कि जब आप उनके विचारों को देखेंगे और उनकी तुलना उस मॉडल से करेंगे जो मैंने आपके सामने प्रस्तुत किया है, तो आप इसे समझ जाएँगे। मैं आसानी से स्वीकार करूँगा कि मेरा मॉडल अधिक चुनौतीपूर्ण है, विशेष रूप से इस अर्थ में कि आपको धर्मग्रंथों का अध्ययन आम लोगों की तुलना में अधिक गहराई से करना चाहिए।

जो लोग नेता हैं, मुझे लगता है कि ऐसा करना उनके लिए एक दायित्व है। इसलिए, मेरे व्याख्यानों को सुनने, मेरे नोट्स पढ़ने आदि के बाद यह स्वयं स्पष्ट हो जाता है, क्योंकि आप इसकी तुलना उन विचारों से करते हैं जिनकी मैं आलोचना करने जा रहा हूँ। इसलिए, हमारा उद्देश्य केवल एक सर्वेक्षण है।

मैं इस पर बहुत ज़्यादा समय नहीं लगाऊंगा क्योंकि मुझे लगता है कि आपके लिए अपना काम खुद करना ज़रूरी है। लेकिन मैं शुरुआत करता हूँ। मैं इसे एकल-इच्छा दृष्टिकोण, कट्टरपंथी व्यक्तिपरकता कहता हूँ।

ब्लैकबी ने शायद केसविक आंदोलन के बारे में सबसे अच्छी प्रस्तुति दी है और बहुत से अमेरिकी चर्चों को प्रभावित किया है, खासकर स्वतंत्र परंपराओं में। यही वह बात है जिसके खिलाफ फ्राइसन ने डलास में अपने शोध प्रबंध में लिखा था, जो बाद में किताब बन गई। इसलिए, ब्लैकबी के बारे में आप जो पढ़ते और सुनते हैं, वह उस विशेष आंदोलन के व्यापक व्यक्तिपरकता, कट्टरपंथी व्यक्तिपरकता का सबसे अच्छा प्रतिनिधित्व करता है।

ब्लैकबी के कुछ मुख्य धारणाएँ यहाँ दी गई हैं। इस दृष्टिकोण का मुख्य विश्वास, और यह एक उद्धरण है, यह है कि ईश्वर के पास न केवल व्यक्तियों के लिए एक विशिष्ट इच्छा है, बल्कि वह उस इच्छा को लोगों तक भी पहुँचाता है, और मैं पहले से ही यह जोड़ना चाहूँगा कि वे उसका पालन कर सकें। अब, वे यहाँ कहते हैं, आप ईश्वर की इच्छा की खोज नहीं करते। ईश्वर आपके साथ चलने की अंतरंगता से आपको इसे प्रकट करता है।

लेकिन फिर भी यह विश्वासी की जिम्मेदारी है कि वह अपने जीवन में परमेश्वर की इच्छा को खोजे। ठीक है। खैर, आप यहाँ कुछ ऐसी बातें सुन रहे हैं जो आपने मुझे कई तरीकों से कहते हुए सुनी हैं।

सबसे पहले, हमने कहा है कि जीवन में किसी व्यक्ति की व्यक्तिगत इच्छा जैसी कोई चीज़ नहीं होती जिसे खोजा जा सके। आपका दायित्व परमेश्वर की इच्छा को पूरा करना है जैसा कि उसने वचन में प्रकट किया है। इसका मतलब कुछ खोजना नहीं है।

इसे इस तरह से कहें। परमेश्वर आपको खोजता है। आपको कोई गुप्त मार्ग नहीं मिलता जिसे आपको परमेश्वर की इच्छा पूरी करने के लिए पहले से बताना पड़े।

लेकिन वे इस व्यक्तिपरक प्रक्रिया पर जोर दे रहे हैं, और दृढ़ता से। वे ईश्वर के प्रकट होने की बात करते हैं, और यह सामग्री का प्रकटीकरण है, मैं मानता हूँ कि वे मेरे हैं, और इसी तरह। इसे समझने के लिए आपको इसे पढ़ना होगा।

नंबर दो, मूल विश्वास के साथ मिलकर, आस्तिक को ईश्वर की प्रत्यक्ष आवाज़ को पहचानना सीखना चाहिए जो ईश्वर की इच्छा को उन तक पहुँचाती है। मेरे लिए, यह पवित्रशास्त्र के साथ प्रतिस्पर्धा की तरह है। आपको काले और भूरे रंग के मॉडल में ईश्वर के वचन का गहन अध्ययन नहीं मिलेगा।

आपको इस आंतरिक भक्तिमय जीवन को खोजने के लिए प्रोत्साहन मिलेगा। अब, यह अमेरिकी चर्च में बहुत प्रमुख था, और इंग्लैंड में भी, यह इसलिए था क्योंकि इसका अधिकांश हिस्सा इंग्लैंड से आया था। और फिर भी, मेरा मानना है कि यह गुमराह करने वाला है।

तीसरा, ईश्वर की आवाज़ कई तरीकों से आती है, लेकिन हमें ईश्वर की आवाज़ सुनना सीखना चाहिए। जब आप किसी अश्वेत व्यक्ति को पढ़ते हैं, तो आपको वचन से सुनने के लिए प्रोत्साहित नहीं किया जाता है। ओह, वे इसके बारे में बात करेंगे, लेकिन आपको इसे इसके बाहर सुनना होगा।

और जो क्षेत्र अभी तक उजागर नहीं हुए हैं, जिनके बारे में हमने बहुत बात की है, कि आपको एक परिवर्तित मन और मूल्य प्रणाली की आवश्यकता है, वे इसके बारे में बात नहीं करने जा रहे हैं। वे आपकी उन व्यक्तिपरक भावनाओं के बारे में बात करने जा रहे हैं। इसीलिए मैं इसे कट्टरपंथी या व्यापक व्यक्तिपरकता कहता हूँ।

चौथा, जीवन का अनुभवात्मक पक्ष, ईश्वर और उसकी इच्छा को जानने का द्वार है। खैर, मुझे लगता है कि शास्त्र बिल्कुल इसके विपरीत कहते हैं। पाँचवाँ, बाइबल की शब्दावली आपके अनुभवात्मक पक्ष को बढ़ाने के लिए एक स्पिंगबोर्ड है।

इसलिए, उन्हें बाइबल पढ़ना एक प्रेरणा है। आप बाइबल को समझने के लिए नहीं पढ़ रहे हैं। आप बाइबल के शब्दों को पढ़ रहे हैं, और यह आपके लिए क्षेत्रों में आगे बढ़ने के लिए एक प्रेरणा है।

इसलिए, यदि आपको बाइबल में ऐसे शब्द मिलते हैं जिनके बारे में आप जानना चाहते हैं कि क्या करना है, तो यह आपके लिए एक तरह से परमेश्वर का नया वचन बन जाता है क्योंकि यह संदर्भ का प्रतिनिधित्व नहीं करता है। छठा, बाइबल का हर पाठ परमेश्वर और उसकी इच्छा को जानने के बारे में बताता है, जो हमारे लिए तुरंत अनुसरण करने का एक आदर्श है। इसमें कोई संदर्भगत सीमाएँ नहीं हैं, बल्कि तब से लेकर अब तक अर्थ और अनुप्रयोग की पूर्ण निरंतरता है।

तो, गिदोन ने ऊन बाहर रख दिया। अच्छा, इसे आजमा कर देखें। जीवन में जिन चीज़ों के बारे में आपको जानना ज़रूरी है, उनके लिए प्रत्यक्ष रहस्योद्घाटन की तलाश को बढ़ावा दिया जाता है।

तो, आप देख सकते हैं कि यह बिल्कुल उससे बिल्कुल विपरीत है जो आप मुझसे सुन रहे हैं और जो मैं बाइबिल के पाठ और नैतिकता के संदर्भ में खोल रहा हूँ जो परमेश्वर की इच्छा को पूरा करने की इस प्रक्रिया में शामिल हैं। वे यह भी स्पष्ट रूप से कहते हैं कि पवित्र आत्मा वर्तमान में परमेश्वर और उसकी इच्छा को प्रकट करने पर काम कर रहा है, और मैंने इसके खिलाफ बहुत कुछ कहा है। परमेश्वर के चरित्र को जानने से परमेश्वर की आवाज़ को पहचानने और पहचानने में मदद मिलती है।

खैर, अगर ईश्वर की आवाज़ शास्त्र है, तो चरित्र को जानना, बाइबल पढ़ने से ईश्वर के चरित्र को समझना, मैं इसके साथ चलाऊँगा, लेकिन मुझे नहीं लगता कि उनका मतलब यही है। ब्लैकबी मॉडल की आलोचना। मैं कहता हूँ कि ब्लैकबी कबीले अनुभवात्मक तर्क को नीचा दिखाते हैं, जबकि कभी यह सवाल नहीं पूछते कि कैसे तय किया जाए कि उनका अनुभवात्मक तर्क वास्तव में ईश्वर है या सिर्फ़ उनके अपने अनुभव की उनकी अपनी व्याख्या है।

सब कुछ अनुभव-केंद्रित है। इस बारे में एक बात है: कोई भी वास्तव में उनसे बहस नहीं कर सकता। आप ऐसे व्यक्ति से बहस नहीं कर सकते जो अपने जीवन को उस परिवर्तित मन और मूल्य प्रणाली के बजाय अनुभव पर आधारित करता है।

वे क्षमाप्रार्थी नहीं हैं। वे ईसाई जीवन जीने और इस दुनिया में आगे बढ़ने के लिए अनुभवात्मक पक्ष को महत्वपूर्ण मानने में संकोच नहीं करते। सब कुछ आपको व्यक्तिगत रूप से प्रकट किया जाना चाहिए।

बाइबल को पूरी तरह से दिखावटी माना गया। ऐसा कौन नहीं करेगा? हालाँकि, पाठ को समझने की प्रक्रिया विशुद्ध रूप से व्यक्तिपरक और अनुभवात्मक है, न कि पाठ के मूल इच्छित अर्थ का संदर्भपरक, व्याख्यात्मक विश्लेषण। इसलिए बाइबल आपकी आंतरिक भावनाओं और अनुभवों को पूरा करने का एक साधन बन जाती है।

मुझे खेद है, बहुत से ईसाई अपने विश्वास के साथ इसी तरह चलते हैं, लेकिन बाइबल खुद को इस तरह प्रस्तुत नहीं करती है और न ही हमें अपना जीवन जीने के लिए प्रोत्साहित करती है। नंबर तीन, बाइबिल के ग्रंथों और कहानियों का उपयोग सारणीबद्ध तरीके से किया जाता है और वे हमारे अनुभवजन्य विचारों का समर्थन करने के लिए प्रमाण ग्रंथ बन जाते हैं। इसलिए, यदि आप कोई निर्णय लेने की कोशिश कर रहे हैं और आपको ज्ञान चाहिए, तो आप बस बाइबिल खोलें

और कहीं भी पढ़ना शुरू करें, और जल्दी या बाद में, आपको कुछ ऐसा मिलेगा जो आपको प्रोत्साहित करेगा और जो आप पहले से ही सोच रहे थे।

वास्तव में यही बात है। यह आपको थोड़ा अलग तरीके से मार्गदर्शन कर सकता है या कुछ और, लेकिन यह अभी भी एक परिवर्तित मन बनाने के लिए शास्त्रों को खोलना नहीं है। यह आपके अपने अनुभवात्मक जीवन को पूर्ण करने के लिए शास्त्रों का उपयोग है।

किसी पाठ का मूल अभिप्रेत अर्थ, अपना समय क्यों बर्बाद करें? नंबर चार, ठीक है, मुझे इस पर वापस जाना चाहिए और फिर तीन को समाप्त करना चाहिए। ब्लैकबी की रचना में उस बात का सबूत नहीं है जिसे मैं पेशेवर बाइबिल जागरूकता कहूंगा। पाठ का आलोचनात्मक और सावधानीपूर्वक अध्ययन मौजूद नहीं है।

ब्लैकबी के लिए धार्मिक और व्याख्यात्मक चेतना विदेशी है। वास्तव में, एक खुश पादरी होने के लिए ऐसी तर्कसंगत आवश्यकताओं को अस्वीकार करना पड़ सकता है। जीवन का एक पक्ष है, एक पक्ष है जिसमें जीवन आसान और अधिक मज़ेदार लगता है, लेकिन मैं आपको यह बताना चाहता हूँ कि यह आपको वह नहीं देगा जो ईश्वर चाहता है कि आप बनें।

चौथा, उनका सिस्टम आंतरिक आवाज़ों का बंदी है। हमने इस बारे में बात की है। यह आपके विश्वदृष्टि मूल्यों से संबंधित विवेक है, और यह ब्लैकबी व्यक्ति में भी होता है।

लेकिन वे जो कुछ भी डालते हैं वह ईश्वर की ओर से प्रत्यक्ष सामग्री इनपुट है जिसे आपको सुनना सीखना होगा। अब, मेरे खयाल से हमारे पास एक विशेष वर्ग के लोग हैं, जो ईश्वर की आवाज़ सुन सकते हैं। जब लोग मुझे बताते हैं कि वे ईश्वर को उनसे बात करते हुए सुनते हैं, तो मेरा उनसे हमेशा यही सवाल होता है, यह दिलचस्प है क्योंकि मैंने हमेशा सोचा है कि ईश्वर की आवाज़ पुरुष की है या महिला की? अब, मुझे लगता है कि यह थोड़ा सा मज़ाक है।

लेकिन सच तो यह है कि यह जो अंदर की आवाज़ है कि मैं वही करता हूँ जो छोटी-छोटी आवाज़ें मुझे करने को कहती हैं, यह एक ऐसा परिदृश्य है जो ईश्वर की शिक्षा के आधार पर नहीं बल्कि आपकी कल्पना के आधार पर चल रहा है। इसलिए, उनका सिस्टम इन आंतरिक आवाज़ों की कैद में है। यह आलोचना करने का कोई कारण नहीं देता।

अपने आत्म-प्रमाणीकरण में, वे पूरी तरह से आत्म-प्रमाणित अनुभवजन्य कथन हैं। वे पुष्टि करते हैं कि जब परमेश्वर आज लोगों से बात करता है, तो वह नए रहस्योद्घाटन प्रदान नहीं कर रहा है या शास्त्र में कोई परिशिष्ट नहीं लिख रहा है। वह अपने वचन को हमारे जीवन के विवरणों पर लागू कर रहा है।

अब, यह एक मिश्रित कथन है। यदि यह पहले से ही पाठ में नहीं है तो परमेश्वर बिना कुछ बताए कैसे बोल सकता है? इसलिए, जहाँ तक मेरा सवाल है, वे एक पक्ष को बनाए रखने की कोशिश कर रहे हैं जबकि वे हार मान रहे हैं और वास्तव में उस पक्ष को नष्ट कर रहे हैं। इसलिए, वे पुष्टि करते हैं कि वह नए रहस्योद्घाटन प्रदान कर रहा है।

वे कहते हैं कि वह कोई नया रहस्योद्घाटन नहीं दे रहा है। तो फिर, आप दुनिया में ऐसे सवाल का जवाब कैसे पा सकते हैं जो बाइबल में नहीं है? तो, यह बस नहीं चलता। यह तैरता नहीं है।

लेकिन वे जिस शब्द का उदाहरण देते हैं उसका अनुप्रयोग संदर्भ आधारित होने के बजाय प्रमाण पाठ है। बस बाइबल में ऐसे शब्द खोजें जो आप जो खोज रहे हैं उससे संबंधित हों, भले ही आकस्मिक रूप से, और वह आपका मार्गदर्शन है। यह बाइबल को पेटबोलने वालों के हाथों में डमी के रूप में बढ़ावा देता है, जो कि ईश्वर की इच्छा की तलाश करने वाला व्यक्ति है।

याद रखें, परमेश्वर की इच्छा खोई हुई नहीं है। इसे खोजने की ज़रूरत नहीं है। यह हमें पहले से ही दी गई है।

जैसे-जैसे हम शास्त्रों का अनुसरण करते हैं और ईश्वर की इच्छा पूरी करते हैं, जीवन के अन्य पहलू ईश्वर के संप्रभु मार्गदर्शन और उस समुदाय की परिस्थितियों के माध्यम से सही रास्ते पर आ जाएंगे जिसमें हम काम करते हैं। पाँचवाँ, रहस्योद्घाटन का कार्य, और मैं वहाँ व्यक्तिगत शब्द का प्रयोग करूँगा। व्यक्तिगत रहस्योद्घाटन का कार्य माना जाता है।

यदि आपके पास रहस्योद्घाटन नहीं है, तो आप ईश्वर की बात नहीं सुन रहे हैं। और इस क्षेत्र के पर्याप्त धार्मिक मूल्यांकन के बिना व्यक्तिपरक रूप से मान्य है। वे जोर देते हैं कि पवित्र आत्मा शब्द का उपयोग कर रहा है, लेकिन उनके दृष्टांत यह जानने की कोई जिम्मेदार प्रक्रिया नहीं दिखाते हैं कि वह शब्द क्या कहता है या शास्त्र की व्याख्या कैसे की जाती है।

बल्कि, यह एक शब्द संघ है। यहाँ बाइबल में एक शब्द है, यहाँ आपका जीवन है; वह शब्द आपके जीवन से संबंधित है, इसलिए, इसके लिए आगे बढ़ें। पाठ से हमारे अनुभव के लिए एक शब्द संघ इस धारणा के साथ कि यह आत्मा का एक सीधा शब्द है।

यह सब मान लिया गया है। लेकिन यह व्याख्या और शास्त्रों में बताए गए इस तथ्य से नहीं हो सकता कि हम ईश्वर का अनुसरण कैसे करते हैं। एक पुरानी कहावत है: अनुभव वाला व्यक्ति कभी भी तर्क करने वाले व्यक्ति की दया पर निर्भर नहीं होता।

मैंने बहुत से अलग-अलग लोगों से बात की, और जब मैंने किसी ऐसे व्यक्ति से बात की जो इस तरह की सोच में था, तो मैं इस तरह की सोच में फंस गया। आप ऐसे व्यक्ति से बहस नहीं कर सकते। आप उनसे पूछने के लिए सवाल ढूँढ़ने की कोशिश कर सकते हैं और उनसे इस बारे में चर्चा कर सकते हैं कि आप कैसे जानते हैं कि यह ईश्वर की आवाज़ है। आप इस आंतरिक भावना को कैसे जानते हैं? क्या ईश्वर वास्तव में आपसे बात कर रहा है और आपकी कोई दूसरी आवाज़ आपसे बात नहीं कर रही है? लेकिन इससे उनके कवच पर कोई असर नहीं पड़ेगा क्योंकि उन्हें यकीन हो गया है कि वे जो आवाज़ें सुनते हैं वे ईश्वर की आवाज़ें हैं।

मैंने बहुत समय पहले वर्जीनिया में एक सेमिनार पढ़ाया था, और उस सेमिनार में एक युवा महिला थी, यह कॉलेज की छात्राएँ थीं। उसने मुझे बताया कि भगवान उसे हर दिन काम करने के लिए मार्गदर्शन करते हैं। अब, जब वह घर से निकलती है, तो वह स्टॉप साइन आने पर भगवान की बात सुनती है।

क्या मुझे बाएं मुड़ना चाहिए? क्या मुझे दाएं मुड़ना चाहिए? क्या मुझे सीधे जाना चाहिए? और वह उस आवाज़ को सुनती, और वह जाती, और कहती, मैं सालों से ऐसा करती आ रही हूँ, और मेरे साथ कभी कोई दुर्घटना नहीं हुई क्योंकि भगवान ने मुझे हर दिन काम पर जाने के लिए निर्देशित किया। यह हमेशा एक अलग मार्ग से होता था, लेकिन यह भगवान का मार्गदर्शन है जो मेरी रक्षा कर रहा है। और ऐसा कोई तरीका नहीं था जिससे मैं उसे यह सोचने के लिए मना सकूँ कि शायद वह खुद से बात कर रही थी।

उसने ईश्वर के संचार के बारे में एक गलत अवधारणा स्थापित की थी, और यह हर तरह से उसके जीवन का मार्गदर्शन कर रही थी। मैं आपको बताता हूँ, यह जीवन में एक बहुत अच्छी स्थिति नहीं है, और ब्लैकबी का आदर्श वाक्य, मेरी राय में, कट्टरपंथी व्यक्तिपरकता है। और बहुत से लोग उस क्षेत्र में रहते हैं।

केसविक आंदोलन इसी क्षेत्र में रहा। अमेरिका में शुरूआती ईसाई अनुभवों ने बहुत से चर्चों को इस तरह की मानसिकता से संक्रमित कर दिया, लेकिन शुक्र है कि हम आखिरकार उस तरह के जाल से बाहर निकल रहे हैं। गॉर्डन स्मिथ के साथ संबंधपरक दृष्टिकोण, ईसाई अस्तित्ववाद सामने आता है।

स्मिथ, ब्लैकबी को पढ़ने के बाद स्मिथ को पढ़ना ताज़ी हवा की सांस की तरह है क्योंकि आपको पवित्रशास्त्र के साथ एक प्रामाणिक जुड़ाव मिलता है, जिसमें हमारे पापी स्व की पहचान के साथ-साथ यह मान्यता भी है कि हम सब कुछ नहीं जानते हैं। इसलिए मैं आपको स्मिथ के काम को देखने की अत्यधिक अनुशंसा करता हूँ। जैसा कि मैंने उल्लेख किया है, वह वेस्लेयन और क्रिश्चियन मिशनरी एलायंस सर्किल में हैं, और ईश्वर की इच्छा के बारे में उनका दृष्टिकोण गॉर्डन स्मिथ के साथ काफी हद तक मेल खाता है।

स्मिथ के मॉडल में कुछ मुख्य बातें हैं। सबसे पहले, वह कहते हैं कि हम ईश्वर की छवि में बनाए गए हैं। हाँ।

जिसके परिणामस्वरूप कार्य के तरीके चुनने की क्षमता मिलती है। हाँ। ईश्वर अपनी सृष्टि की प्रकृति को बिना किसी प्रत्यक्ष प्रक्रिया के सूक्ष्म प्रबंधन के संचालित होने देता है।

आप देखिए, यह केसविक और ब्लैकबी के बीच सीधा विरोधाभास है। ईश्वर और समुदाय के साथ हमारा रिश्ता निर्णय लेने के लिए एक मैट्रिक्स बनाता है। इसलिए, यहाँ निर्णय लेना यह है कि हम ईश्वर की छवि में बनाए गए हैं, हम सोचते हैं, महसूस करते हैं, प्राणियों को चुनते हैं, और हम अपना जीवन ईश्वर द्वारा सूक्ष्म रूप से प्रबंधित नहीं करते हैं, और वह इसके बारे में और अधिक कहेंगे, लेकिन शास्त्र और उस विश्वदृष्टि द्वारा प्रबंधित, और समुदाय में हमारे रिश्ते।

वेस्लेयन दृष्टिकोण से, समुदाय बहुत महत्वपूर्ण है। बाइबल में इसका बहुत महत्व है। उदाहरण के लिए, यदि कोई व्यक्ति कहता है, मुझे पादरी बनने के लिए बुलाया गया है, और वे चर्च में जाते हैं और कहते हैं, मैं चाहता हूँ कि आप मुझे पादरी बना दें।

मैं 1 तीमुथियुस 3 का जवाब दे रहा हूँ। मैं पादरी का पद चाहता हूँ। वहाँ उसे बिशप कहा जाता है। और चर्च को क्या करना चाहिए? उस व्यक्ति के दावे के आगे झुक जाना चाहिए? नहीं।

यदि आप तीमुथियुस को पढ़ें, तो उस व्यक्ति का बुलावा एक दावा है। लेकिन चर्च उस व्यक्ति का मूल्यांकन करता है और वास्तव में वह ईश्वर की आवाज़ है। एक समुदाय के रूप में चर्च को यह तय करना होता है कि उन्हें पादरी का पद मिलना चाहिए या नहीं।

शायद अभी नहीं, शायद किसी और प्रशिक्षण के बाद या किसी और अनुभव के बाद, लेकिन अभी नहीं। लेकिन अमेरिका में, इस तरह के लोग चर्च जाते हैं। चर्च वह नहीं करता जो वह करना चाहता है, जो वह कहता है कि ईश्वर उससे करवाना चाहता है।

वे बस सड़क के नीचे दूसरे चर्च में चले जाते हैं जब तक कि उन्हें कोई ऐसा चर्च न मिल जाए जो उनकी सोच के अनुसार हो। स्मिथ ऐसा नहीं करते। ब्लैक एक हो सकते हैं, लेकिन स्मिथ नहीं।

स्मिथ समुदाय को ईश्वर की इच्छा को पहचानने में महत्वपूर्ण मानते हैं। मुझे भी ऐसा ही लगता है, क्योंकि समुदाय के पास वह विश्वदृष्टि और मूल्य प्रक्रिया है, जो मेरे दृष्टिकोण से लोगों को मार्गदर्शन करने में मदद करेगी। नंबर दो, स्मिथ निर्णय लेने के लिए एक विशिष्ट इच्छा खोजने के ब्लूप्रिंट दृष्टिकोण को अस्वीकार करते हैं।

उस ब्लूप्रिंट दृश्य में, वह उस नामकरण का उपयोग करता है। इसका मतलब यह है कि व्यक्तिपरक दृष्टिकोण में, वे कहते हैं कि आपको बिंदु खोजना होगा। इसका मतलब है कि आपको ईश्वर की इच्छा को खोजना होगा ताकि आप ऐसा कर सकें।

और हम बाइबल से गुजर चुके हैं। बाइबल में कहीं भी ऐसा नहीं कहा गया है। और स्मिथ खुद इसे अस्वीकार करते हैं।

उन्हें इस बात का अच्छा ज्ञान है कि यहाँ धर्मग्रंथ किस तरह काम कर रहे हैं। वे बस अनुभवात्मक पक्ष को ज़्यादा लाते हैं, लेकिन शुक्र है कि यह अनुभवात्मक पक्ष बहुत ज़्यादा सुरक्षित है और डोमेन के कालेपन की तुलना में बहुत ज़्यादा नियंत्रित अनुभवात्मक पक्ष है। वे आगे कहते हैं।

जैसा कि मैंने कहा, मेरे उत्तर ने मुझे परेशान कर दिया। स्मिथ उचित रूप से इस तनाव पर विचार करते हैं कि पाप किस तरह से मानव प्रक्रिया को प्रभावित करता है। हम जितना अच्छा जीवन जीते हैं, उतना ही अच्छा समझते हैं, और हम जितना अच्छा समझते हैं, उतना ही अच्छा जीते हैं।

तो, यह निरंतर विवेकपूर्ण प्रक्रिया चल रही है। वह इसे आपके ईसाई परिपक्वता, पवित्रीकरण और समुदाय में काम करने की प्रक्रिया के रूप में प्रस्तुत करेंगे। वहाँ बहुत कुछ अच्छा है।

साथ ही, मैं वापस आकर यह कहना चाहता हूँ कि, वास्तविक नियंत्रण विश्वदृष्टि, मानसिकता और मूल्यों को परिवर्तित करने में है, जो जीवन के मुद्दों के बारे में निर्णय लेते हैं।

तीसरा, निर्णय लेने की प्रक्रिया को मसीह के साथ एकता के संदर्भ में सबसे अच्छी तरह से समझा जा सकता है जो इतनी अंतरंग है कि हमारे निर्णय लेने में ईश्वरीय भागीदारी की आवश्यकता होती है। खैर, मुझे लगता है कि ईश्वर हमारे निर्णय लेने में शामिल है।

उसने हमें अपना वचन दिया है। वह अपने विधान का प्रयोग करता है। उसने हमें ऐसे समुदायों में रखा है जो हमारा मार्गदर्शन करने में मदद करते हैं।

और इसलिए, यहाँ कोई समस्या नहीं है। स्मिथ अनुभवात्मक पक्ष की वेस्लेयन परंपरा में बहुत कुछ जोड़ते हैं। अगर आपको याद हो, जब हमने चतुर्भुज अनुभव के बारे में बात की थी, तो यह उसका अंतिम भाग था।

और जैसा कि हम स्मिथ को सुन रहे हैं, हम उस अंश को सुन रहे हैं, जो शायद वेस्लेयन को इसके बारे में बात करना पसंद होगा। और मुझे लगता है कि इसका कुछ मूल्य है, लेकिन दिन के अंत में, यह अंतिम मध्यस्थ नहीं है। इसलिए, निर्णय लेने को मसीह के साथ एकता के संदर्भ से सबसे अच्छा माना जाता है जो बहुत अंतरंग है।

स्मिथ के तर्क कि कैसे ईश्वर के साथ घनिष्ठता बाइबिल की समझ द्वारा निर्देशित होती है, हमारे निर्णय लेने में सहायता करती है। खैर, मैं इससे असहमत नहीं हूँ क्योंकि मुझे लगता है कि यह महत्वपूर्ण है कि हमारा ईसाई जीवन, हमारा प्रार्थना जीवन, अन्य ईसाइयों के साथ हमारा जीवन, और सेवकाई का काम चाहे वह आम आदमी के रूप में हो या व्यावसायिक कार्यकर्ता के रूप में, यह सब इस बात का मिश्रण है कि समुदाय और वचन के माध्यम से ईश्वर द्वारा हमारे जीवन को कैसे निर्देशित किया जा रहा है। कोई समस्या नहीं।

स्मिथ एक स्पष्ट धार्मिक ग्रिड से लिखते हैं, जबकि ब्लैकबी में ग्रिड का अभाव है और वह केवल एक अनुभवात्मक ग्रिड से लिखते हैं जो अपने उद्देश्यों की पूर्ति के लिए शास्त्र को मोड़ता है। नतीजतन, भले ही कोई स्मिथ से सहमत न हो, उसके तर्कपूर्ण व्यक्तिपरकता का सम्मान करने के कारण हैं, जैसा कि मैं इसे कहूँगा। जहाँ तक मेरे आकार का सवाल है, मैंने थोड़ी अलग शब्दावली का इस्तेमाल किया है, लेकिन तर्कपूर्ण व्यक्तिपरकता ही वह तरीका है जिससे मैं स्मिथ के बारे में बात करता हूँ।

स्मिथ खुद भी व्यक्तिपरक धारणाओं के बारे में अपने दावों में बहुत सतर्क हैं। वह काफी हद तक ब्रेक लगाते हैं। चौथा, उपरोक्त संदर्भ से, स्मिथ पुष्टि करते हैं कि ईश्वर बोलता है, लेकिन यह भाषण सूक्ष्म और जटिल है।

स्मिथ ईश्वर की वाणी सुनने के दावे से बचते हैं। वह पुष्टि करते हैं कि विवेक विश्वास और विनम्रता में एक महत्वपूर्ण प्रतिबिंब है जो हमें उनके शिष्य बनने में सक्षम बनाता है। ईश्वर की आवाज़ को समझने के लिए आलोचनात्मक सोच की आवश्यकता होती है, और किसी को यह मानने से बचना चाहिए कि आवाज़ें स्वचालित रूप से आधिकारिक हैं।

इसलिए, वह मूल रूप से ईश्वर की आवाज़ को ईश्वर के रहस्योद्घाटन की आवाज़ के समानार्थी के रूप में उपयोग कर रहा है, जो कि पवित्रशास्त्र में है और वेस्लेयन द्वारा समुदाय में दृढ़ता से

विस्तारित किया गया है। मुझे लगता है कि समुदाय अत्यंत महत्वपूर्ण है। यह केवल अधिकार का मुद्दा है, और फिर भी पवित्रशास्त्र समुदाय को कुछ तरीकों से अधिकार देता है, जैसा कि हमने 1 तीमुथियुस 3 में उल्लेख किया है। स्मिथ बाइबिल के पाठ का उपयोग करने के खिलाफ चेतावनी देते हैं, जो कि प्रमाण पाठ और कहानियों को मानक मार्गदर्शन क्लिप के रूप में उपयोग कर सकता है।

इस तरह की प्रथाएँ पवित्रशास्त्र को हमारी अपनी धारणाओं में जबरन शामिल करके उसका दुरुपयोग कर सकती हैं। तो, यहाँ फिर से, आप वही सुनते हैं जो मैं कह रहा था, व्यक्तिपरक क्षेत्र को अधिकार दिए बिना, और स्मिथ यहाँ भी सावधान हैं। तो, आइए इसकी आलोचना करें।

स्मिथ को पढ़ते हुए तुरंत ही यह महसूस होता है कि सावधानीपूर्वक धार्मिक चिंतन हो रहा था। स्मिथ का मॉडल तर्कपूर्ण व्यक्तिपरकता है, जो ईश्वरीय जीवन द्वारा निर्देशित संबंधपरक विकास मॉडल पर आधारित है। स्मिथ किसी विशिष्ट इच्छा पर जोर नहीं देते हैं, जिस व्यक्तिगत इच्छा के बारे में हमने बात की है, उसे खोजना होगा, और ब्लैकबी के मॉडल में, सही काम करने के लिए उस इच्छा को पहले से ही खोजना होगा।

हालाँकि, वह एक आंतरिक मार्गदर्शन प्रक्रिया की पुष्टि करता है। मैं एक आंतरिक मार्गदर्शन प्रक्रिया को अस्वीकार नहीं करने जा रहा हूँ; मैं बस इसे अपने दृष्टिकोण से परिभाषित करने जा रहा हूँ। वह आंतरिक मार्गदर्शन प्रक्रिया विवेक और आत्मा से संबंधित है, और यह समझना कि यह हमारी सोच प्रक्रिया के अंदर कैसे काम करती है, जैसा कि हम इस पर चर्चा कर चुके हैं।

इसलिए, स्मिथ के साथ हमारी बहुत सी समानताएँ हैं, हालाँकि अभी भी कुछ अंतर हैं। स्मिथ मॉडल की आलोचना। स्मिथ को पढ़ते ही व्यक्ति को तुरंत यह अहसास होता है कि उन्होंने सावधानीपूर्वक धार्मिक चिंतन किया है।

यह तर्कपूर्ण व्यक्तिपरकता है, और जैसा कि मैंने अभी उल्लेख किया है, वह आंतरिक मार्गदर्शन की पुष्टि करता है। यह अच्छा है कि स्मिथ ईश्वर की छवि में बनाए जाने के सादृश्य से शुरू करते हैं और दुनिया के प्रबंधन के लिए इसका क्या अर्थ है। स्मिथ का व्यक्तिपरकतावाद स्पष्ट लेकिन सतर्क है।

आत्मा की गवाही और प्रेरणाओं के बारे में स्मिथ का दृष्टिकोण, जो हमने आत्मा पर मेरे व्याख्यान में किया था। स्मिथ ब्लैकबी की तुलना में इस मामले में अधिक विवेकपूर्ण हैं कि पाप ने मानव प्रक्रियाओं को कैसे प्रभावित किया है और निर्णय लेने में बाइबल क्या भूमिका निभाती है। इसलिए, गॉर्डन स्मिथ के काम को पढ़ें और उन चीज़ों के खिलाफ पढ़ें जिनके बारे में मैं आपसे बात कर रहा हूँ, और आप यह पता लगा सकते हैं कि बाइबल आपको कहाँ ले जा रही है या कहाँ नहीं।

यही एक बात है जिस पर मैं जोर देने जा रहा हूँ। अगर यह सीधे तौर पर धर्मग्रंथों में नहीं है, तो आप निहितार्थों में हैं। निहितार्थों को कई अलग-अलग तरीकों से पढ़ा जा सकता है, या आप ऐसी संरचनाएँ बना रहे हैं जहाँ आप बाइबल को बता रहे हैं कि आपको क्या सोचना चाहिए, बजाय इसके कि बाइबल आपको बताए।

हालाँकि धार्मिक दृष्टिकोण में निर्माण अधिक मान्य हो सकते हैं, हमें बस इस बात पर ध्यान देना होगा कि हम उन्हें कैसे जोड़ते हैं। हमें बड़े कथात्मक प्रमाण की आवश्यकता है। फिर हम गैरी फ्राइसन और जिसे मैं ईसाई व्यावहारिकता कहता हूँ, पर आते हैं।

फ्राइसन की लोकप्रिय पुस्तक, डिजीजन-मेकिंग इन द विल ऑफ गॉड, ए बाइबिलिकल अल्टरनेटिव टू द ट्रेडिशनल व्यू। यह डॉवेल सेमिनरी में लिखे गए उनके शोध प्रबंध से लिखी गई थी, जो अमेरिका में कैथोलिक आंदोलन की आलोचना थी। यह इंग्लैंड से आया था।

यह एक अत्यंत व्यक्तिपरक, भक्ति आंदोलन था। मुझे याद है कि मैं इस युग में रहता था, और जो लोग इन शिक्षाओं का पालन कर रहे थे, वे नॉरफ़ॉक, वर्जीनिया के कब्रिस्तानों में जाते थे, जहाँ बहुत सारे क्रॉस और बहुत सारी चीज़ें थीं, और वहाँ बैठकर सूरज को उगते हुए देखते थे। जब सूरज उगता था, तो जिस तरह से छायाएँ पड़ती थीं, उससे उन्हें बहुत भक्ति भावनाएँ मिलती थीं और वे अपने दिन के लिए तैयार हो जाते थे।

कभी-कभी, जहाँ वे बैठे होते थे, वहाँ क्रॉस की छाया उनके पीछे-पीछे चलती थी, और यह एक दिव्य कार्य था, जैसा कि यह था। अत्यंत, अत्यंत व्यक्तिपरक। इसलिए फ्राइसन ने इसके बाद काम किया, और मुझे लगता है कि उन्होंने स्पष्ट रूप से बताया कि वह दृष्टिकोण, जो कि अश्वेत मान्यताओं द्वारा दर्शाया जाएगा, बिल्कुल स्वीकार्य नहीं है और यह स्वयं शास्त्रों की शिक्षाओं का उल्लंघन है।

इसलिए, फ्राइज़न का ध्यान, दाईं ओर की चौथी पंक्ति, एक अर्थ में व्यापक धार्मिक परंपराओं का प्रतिनिधित्व करने के लिए बहुत संकीर्ण था। आप देखिए, फ्राइज़न केसविक आंदोलन के पीछे था, जो ब्लैकबी का प्रोटो-था। ब्लैकबी अभी तक दृश्य में नहीं था।

यह बाइबल चर्च के बहुत से व्यक्तिपरक संप्रदायों का मामला रहा होगा, कुछ हद तक, जहाँ केसविक आंदोलन का प्रभाव था, उन चर्चों में एक बड़ा प्रभाव था, लेकिन बहुत से स्वतंत्र सेटिंग्स में। जे. ओसवाल्ड सॉन्गबर्ड्स और कुछ अन्य केसविक आंदोलन में बड़े थे और जिस तरह से उन्होंने वचन को प्रस्तुत किया, वह बहुत ही व्यक्तिपरक था। और हम सभी ने उन पुस्तकों को पढ़ा है, और मेरे ईसाई जीवन की शुरुआत में, मैं उनसे धन्य हो गया।

लेकिन जैसा कि मैंने समझा है, मैं अपने जीवन को उनके मॉडल के अनुसार नहीं चलाता क्योंकि उनका मॉडल आत्म-निर्देशन का मॉडल है, ईश्वर-निर्देशन का नहीं। इतने सारे बैपटिस्ट, यूएसए में स्वतंत्र बाइबिल चर्च परंपराओं ने भोलेपन से उन धारणाओं को अपनाया जो उस व्यक्तिपरक आंदोलन में प्रचलित थीं। जब फ्राइसन आए और उन्होंने बताया कि कोई व्यक्तिगत इच्छा नहीं है, एक संप्रभु और नैतिक इच्छा है, और फिर वह मॉडल है जो उन्होंने निर्णय लेने के लिए दिया।

मैं आपको बता रहा हूँ, यह एक धमाकेदार घटना थी। मैं उस समय दक्षिण में एक स्वतंत्र बैपटिस्ट स्कूल में पढ़ा रहा था और लगभग नौकरी से निकाल दिया गया था क्योंकि पूर्व छात्र इतनी ज़ोर से शिकायत कर रहे थे कि मैं अपने नैतिकता वर्ग के भीतर एक मॉड्यूल के रूप में फ्राइसन की किताब का उपयोग कर रहा था। वाह।

मेरा मतलब है, वे अड़े हुए थे क्योंकि उनका दावा था कि फ्राइसन ने बाइबल से पवित्र आत्मा को हटा दिया है, जो बेतुका है। और क्योंकि वह उन चीज़ों के खिलाफ़ आवाज़ उठा रहा था जिन्हें उन्होंने अपनाया था, कभी-कभी अनजाने में भी, उस व्यक्तिपरकता से जो अमेरिकी स्वतंत्र चर्च आंदोलन में घुस गई थी। मुझे लगता है कि हम उन सभी परिस्थितियों में उससे आगे बढ़ चुके हैं, लेकिन किसी भी तरह से पूरी तरह से नहीं।

79 से 83 तक, मैंने फ्राइसन की किताब का इस्तेमाल किया और इसकी सराहना की। लेकिन जैसे-जैसे मैं दशकों तक ईश्वर की इच्छा के इस मुद्दे के बारे में सोचता रहा, मुझे पता चला कि फ्राइसन में जो चीज़ें गायब थीं, मेरे लिए, वे चीज़ें हैं जिन पर बाइबल जोर देती है। हमने अपने पुराने नियम और नए नियम के मॉड्यूल में इसके बारे में बात की है, साथ ही परिवर्तित मन के तथ्य के बारे में भी।

वह ईसाई धर्म के एक छोटे से हिस्से पर प्रतिक्रिया देने में इतना उलझा हुआ था कि मुझे डर है कि उसने इसे बहुत ज़्यादा महत्व दिया क्योंकि उसने कभी भी इसके कैल्विनवादी विचारों पर विचार नहीं किया। उसने कभी भी मुख्य प्रोटेस्टेंटों पर विचार नहीं किया। उसने करिश्माई समूहों पर भी विचार नहीं किया, भले ही व्यक्तिपरकता वहाँ तक जा सकती थी।

वह एक बहुत ही संकीर्ण मुद्दे पर केंद्रित था जिस पर ध्यान देने की आवश्यकता थी, लेकिन फिर यह पुस्तक प्रकाशित होने के बाद व्यापक हो गई, जो मुझे लगता है कि शायद एक अच्छा विचार नहीं था। ठीक है, तो फ्राइसन की केंद्रीय धारणाएँ क्या हैं? ठीक है, नंबर एक, वह कहता है कि कोई विशिष्ट इच्छा नहीं है। जिस संदर्भ में वह बोल रहा था, उसमें यह एक बड़ा मुद्दा है, और यह एक बम की तरह था क्योंकि हर कोई अपने जीवन के लिए ईश्वर की इच्छा जानने की कोशिश कर रहा था, और इसका मतलब था कि सही निर्णय लेने के लिए समय से पहले उस जानकारी को खोजना।

और बहुत सारा समय प्रार्थना करने, सवाल पूछने में बीतता है, लेकिन शास्त्रों का अध्ययन नहीं किया जाता। शास्त्र कभी नहीं कहते कि परमेश्वर की इच्छा का पता लगाओ। शास्त्र कहते हैं कि परमेश्वर की इच्छा पूरी करो, और कई अन्य मुद्दों के साथ ऐसा करने की प्रक्रिया में, आपका जीवन उन रास्तों पर चलेगा जो उचित हैं और परमेश्वर के संरक्षण में आपके लिए काम करते हैं।

ठीक है, उन्होंने क्या कहा? खैर, उन्होंने कई बातें कहीं। यहाँ उनमें से चार हैं, और मैं अपनी लगभग सारी बातें उनकी मूल पुस्तक से ले रहा हूँ, जो मुझे लगता है कि उनकी सबसे अच्छी पुस्तक थी। जहाँ परमेश्वर आज्ञा देता है, हमें उसका पालन करना चाहिए।

इसमें कोई संदेह नहीं है। आज्ञाओं का पालन करना ही होगा। मुझे याद नहीं आता कि उन्होंने प्रकाशितवाक्य की प्रगति और वर्णन और नुस्खे के मुद्दे के बारे में पर्याप्त बात की थी, जिसे हमने उन आदेशों के संदर्भ में नोट किया था।

इसलिए, हमें आज्ञाओं के बारे में सावधान रहना चाहिए क्योंकि बाइबल में हर आज्ञा मेरे लिए नहीं है। हो सकता है कि यह समय के साथ किसी और श्रोता के लिए हो। याद रखें, बाइबल हमारे लिए नहीं लिखी गई है।

बाइबल हमारे लिए लिखी गई है। हम इससे सीखते हैं, लेकिन आपको इसे सीधे अपने तक पहुँचाने के बारे में सावधान रहना होगा। लेकिन फिर भी, हम अभी भी सहमत हैं।

अगर यह अनिवार्य है, तो हमें यह पता लगाना चाहिए कि क्या यह अनिवार्यता हम पर भी लागू होती है, और अगर ऐसा है, तो हमें इसका पालन करना चाहिए। इसमें कोई संदेह नहीं है। मेरा चार्ट इस बात को स्पष्ट करता है।

जहाँ कोई आदेश नहीं है, वहाँ ईश्वर हमें चुनने की स्वतंत्रता और जिम्मेदारी देता है। खैर, मैं भी इससे सहमत हूँ। और फिर भी, मुझे फ्रीसेन के लेखन में स्वतंत्रता का अर्थ बताने के लिए कोई उपयुक्त मॉडल नहीं मिलता।

हम स्वतंत्र नहीं हैं। हम अपनी प्रकृति से बंधे हैं। हम अपनी विश्वदृष्टि और मूल्य प्रणाली से बंधे हैं।

और अगर यह गलत है, तो हम गलत हैं। हमें उस विशेष क्षेत्र पर काम करना होगा ताकि हम शास्त्र की शिक्षाओं के अनुसार अच्छे निर्णय ले सकें। और हाँ, हम बुद्धिमान हैं।

वह कहते हैं कि ईश्वर हमें बुद्धि देता है। खैर, वह हमें कैसे देता है? जब वह ईश्वर द्वारा बुद्धि दिए जाने की बात पर पहुँचता है, तो वह खुद व्यक्तिपरक हो जाता है। क्योंकि मुझे लगता है कि बुद्धि बाइबल के ग्रंथों के न्याय-निर्णय से प्राप्त होती है।

नीतिवचन ने यही किया। बाइबल का ज्ञान साहित्य भी यही करता है। यह कानून का हवाला नहीं देता, बल्कि कानून के सिद्धांतों को लेता है और उन्हें जीवन में उतारता है।

और इसी तरह से ज्ञान प्राप्त होता है। ज्ञान अपने आप में ज्ञान बन जाता है। यह सिर्फ आध्यात्मिक लाभ नहीं है।

जब हमने नैतिक और बुद्धिमानी से काम करने का फैसला कर लिया है, तो हमें सभी विवरणों को पूरा करने के लिए सर्वोच्च परमेश्वर पर भरोसा करना चाहिए। खैर, हमें बहुत भरोसा करना होगा। और हमें नैतिकता का पालन करना होगा।

लेकिन बुद्धि के बारे में उस बात की कुछ आलोचना की ज़रूरत है, खास तौर पर। बुद्धि के बारे में मैंने आपसे जो बातें की हैं, यह कैसे विकसित होती है, और इसका वास्तव में क्या मतलब है, यह बुद्धि साहित्य के अध्ययन का एक छोटा सा हिस्सा है, जो निर्णय लेने के संबंध में एक बहुत ही महत्वपूर्ण हिस्सा है। मैंने अभी एक किताब उठाई है।

यह मेरी मेज़ पर है - बुद्धि का हेर्मेनेयुटिक्स। अब, मुझे यह मिल गया।

मैंने इसे पढ़ा। और मुझे यह कथन पसंद आया - बुद्धि का हेर्मेनेयुटिक्स।

आपको ज्ञान का अध्ययन करना होगा, और आपको यह भी अध्ययन करना होगा कि आप किस बात का दावा करते हैं कि वह ज्ञान है। अन्यथा आप एक व्यक्तिपरक दावे के अलावा कुछ नहीं कर रहे हैं। और मुझे लगता है कि यह एक पल के लिए बुद्धिमानी वाली बात है।

मुझे लगता है कि यह ज़्यादा जटिल है। अब, मुझ पर बहुत ज़्यादा जटिल होने का आरोप लगाया जाता है। लेकिन मुझे खेद है।

यदि आप बाइबल आधारित विश्वदृष्टि और मूल्य प्रणाली का पालन करने जा रहे हैं, तो आपको इसे विकसित करने और अपने मन को बाइबल द्वारा बताए गए तरीके से तालमेल में लाने के लिए कुछ करना होगा। नोट। हम जिम्मेदारी कैसे निभाते हैं? खैर, हम इसे निभाते हैं, और हम ऐसा करने के लिए स्वतंत्र हैं।

लेकिन हम सीमाओं में स्वतंत्र हैं। आपको उन सीमाओं को समझना होगा। देने का क्या मतलब है? वह भगवान द्वारा बुद्धि देने के बारे में बात करता है।

खैर, उनका मतलब प्रत्यक्ष रहस्योद्घाटन से नहीं है। और फिर भी, मुझे लगता है कि इसके लिए कोई उचित स्पष्टीकरण नहीं दिया गया है। मुझे लगता है कि यह मान लिया गया है।

बुद्धिमानी को न तो बाइबिल में परिभाषित किया गया है और न ही दार्शनिक रूप से। फ्राइसन की प्रस्तुति में कोई दार्शनिक अंश नहीं है। कोई नैतिक सिद्धांत अंश नहीं है।

दर्शनशास्त्र और नैतिकता ईसाइयों के लिए मार्गदर्शन प्रणाली का एक बहुत बड़ा हिस्सा हैं, जब बाइबल सीधे तौर पर नहीं बोलती है क्योंकि हमें निर्णय लेने में सक्षम होने के लिए पूर्व-निर्मित तर्क के निहितार्थों से निपटना पड़ता है। और हमने इस बारे में बहुत सारे अलग-अलग तरीकों से बात की है।

फ्राइसन मॉडल की आलोचना।

फ्राइसन और मेरे बीच कुछ बिंदुओं पर सहमति है। जैसा कि मैंने कहा, मैंने उनकी किताब का प्रचार किया और लगभग नौकरी से निकाल दिया गया क्योंकि मुझे लगा कि इसमें कुछ अच्छा कहा गया है। लेकिन फ्राइसन और मैं अलग-अलग पृष्ठों पर हैं।

जब बात जीवन और उन चीज़ों में बुद्धि के मुद्दों पर तर्क करने की आती है तो हम ग्रह के अलग-अलग हिस्सों में हैं। नंबर दो, फ्राइसन अक्सर एक छोटी सी दुनिया में रहते हैं, भगवान की इच्छा के विषय पर एक छोटा सा दृष्टिकोण। उदाहरण के लिए, केसविक आंदोलन और यहां तक कि ब्लैक लेबल आंदोलन, आप इसे पारंपरिक दृष्टिकोण नहीं कह सकते।

आप इसे अमेरिकी ईसाई संस्कृति के भीतर एक अलग दृष्टिकोण कह सकते हैं। हालाँकि इसने इंग्लैंड के कुछ लोगों को संक्रमित किया, लेकिन उन्होंने इसे लगभग बाहर निकाल दिया क्योंकि

अंग्रेजी बाइबिल के विद्वानों का इससे कोई लेना-देना नहीं था। तीसरा, फ्राइसन की आलोचना इस बारे में अधिक हो सकती है कि वह क्या नहीं कहता है, न कि वह क्या कहता है।

उदाहरण के लिए, वह कई महत्वपूर्ण मुद्दों को पर्याप्त रूप से निर्दिष्ट या संबोधित नहीं करता है जो मुझे लगता है कि ईश्वर की इच्छा की अवधारणा को सलाह देने में महत्वपूर्ण हैं। उदाहरण के लिए, फ्राइसन ने ज्ञान शब्द को कॉपीराइट करने का प्रयास किया है। मैं ज्ञान शब्द का उपयोग करता हूँ, इसलिए, मुझे उनके शिविर में होना चाहिए।

खैर, मैं उनसे कई बातों पर सहमत हूँ, लेकिन मैं उनके खेमे में नहीं हूँ। हम दोनों एक दूसरे से बिल्कुल अलग हैं। वह कभी भी ज्ञान को बाइबल या दार्शनिक रचना के रूप में नहीं बताते।

वह कभी भी इस बात पर जोर नहीं देता। वह केवल यह दावा करता है कि बुद्धिमानी से काम करो। खैर, यह जानना कि बुद्धिमानी से काम क्या करना है, कोई छोटी बात नहीं है।

वह पृष्ठ 266 पर बुद्धि के तरीकों की एक सूची देता है, लेकिन यह केवल वही देता है जिसे मैं व्यावहारिकता कहता हूँ। यह शास्त्र से निर्णय तक तर्क की रेखाएँ नहीं देता। फ्राइसन कहते हैं, बुद्धिमानी से काम करो।

लेकिन ऐसा कैसे होता है? बुद्धिमानी वाली बात क्या है? खैर, यह बहुत हद तक वही है जो मुझे लगता है कि बुद्धिमानी वाली बात है। फ्राइज़न पर करीब से नज़र डालने से पता चलता है कि इस बुद्धिमानी वाली बात में एक नया व्यक्तिपरकतावाद पैदा होता है। तीसरा, जबकि फ्राइज़न ईश्वर की संप्रभु इच्छा को नोट करता है, वह इसे ईश्वर की भविष्यवाणी की अवधारणा से पर्याप्त रूप से नहीं जोड़ता है।

मेरे हिसाब से, वह ईश्वर की कृपा नहीं है। बहुत महत्वपूर्ण ओपनर। जब मैं अपने पेज को देखता हूँ, तो मुझे खेद है, मुझे धुंधलापन महसूस होता है क्योंकि मैं कुछ खराब दृष्टि और रेटिना की समस्या से जूझ रहा हूँ।

इसलिए मैं आपसे क्षमा और सहनशीलता की भीख माँगता हूँ। वह यह नहीं बताता कि पाप से दूषित होने पर मानव स्वभाव कैसे काम कर सकता है। मुझे लगता है कि पतन के इस मुद्दे को संबोधित करना बिल्कुल ज़रूरी है।

मुझे यकीन है कि इसका उल्लेख किया गया है। मुझे इस पुस्तक को पढ़े हुए काफी समय हो गया है। मैंने उस पुस्तक को कई बार पढ़ा है और उस पर बात की है।

तो, मैं इससे काफी परिचित हूँ। हमेशा उसे पाने की जरूरत है। लेकिन सच तो यह है कि वह बुद्धि के साथ व्यवहार नहीं कर रहा है जैसा कि बाइबल में किया गया है।

और जैसा कि हम इसे नैतिकता के एक मॉडल में डालेंगे। लेकिन इसके बजाय, यह बहुत व्यावहारिक हो जाता है; यह एक नया आध्यात्मिक सुविधा वाला विचार है जिसे वह बढ़ावा देता है। इसलिए वह खुद को इसके अधीन कर रहा है।

सच कहूँ तो, मुझे लगता है कि उनका दूसरा खंड, जो पहले के 25 साल बाद आया, और भी ज्यादा व्यक्तिपरक है। मैंने उस किताब की पूरी तरह से आलोचना नहीं की है। लेकिन जब मैंने इसे पढ़ा, तो मैंने खुद से कहा, हे भगवान, वह व्यक्तिपरकता से दूर होने के बजाय उसमें और आगे बढ़ गया है।

तीसरा, जबकि फ्राइसन ईश्वर की संप्रभु इच्छा पर ध्यान देते हैं, वे वास्तव में इसे ईश्वर की नियति की अवधारणा से नहीं जोड़ते हैं और यह स्वतंत्रता के विचार के साथ कैसे जुड़ता है। हम स्वतंत्र हैं। मैंने कहा है कि हम स्वतंत्र नहीं हैं।

हम अपनी प्रकृति से बंधे हुए हैं। हम अपनी प्रकृति की सीमाओं के भीतर स्वतंत्र हैं। और ईश्वर की कृपा के भीतर भी स्वतंत्रता का मुद्दा है।

हम इसके खिलाफ नहीं जा सकते। जबकि फ्राइसन की स्वतंत्रता पर जोर देने की योग्यता है, लेकिन प्रकृति और सीमा के संदर्भ में स्वतंत्रता के उनके विचार पर और अधिक आलोचनात्मक विचार की आवश्यकता है। वह इस बात पर ध्यान नहीं देते कि पाप से दूषित होने पर मानव स्वभाव कैसे काम कर सकता है।

फ्राइसन अंतिम बिंदु का उपयोग नहीं करते हैं और बाइबल से आगे बढ़कर निर्णयों के लिए कोई तर्कसंगत मॉडल प्रदान नहीं करते हैं। वह मूल रूप से बहुत सारे निर्णयों से निपटते हैं जो मुझे लगता है कि पवित्रशास्त्र के भीतर बहुत स्पष्ट रूप से परिभाषित हैं। वह हमारे सामने मौजूद कुछ मौजूदा सांस्कृतिक चुनौतियों में नहीं जाते हैं।

इनमें से कुछ चुनौतियाँ तो तब भी नहीं थीं जब उन्होंने रिक रोथ के साथ मिलकर लिखा था। फ्राइसन बाइबल से आगे बढ़कर निर्णय लेने के लिए कोई तर्कसंगत मॉडल नहीं देते हैं। अगर या जब बाइबल ठोस हो, तो क्या निर्णय लेने वाले को ही चुनना होता है? मैं कहना चाहूँगा कि हाँ कहना भोलापन है।

विश्वदृष्टि और मूल्यों का मॉडल किस तरह काम करता है, यह मुद्दा गायब है। वह दर्शन और नैतिकता के बारे में जागरूकता को नहीं दर्शाता है और यह ईसाई सोच की प्रक्रिया को कैसे सूचित करता है। मेरे पास ईसाई आंदोलन में नैतिकता की पुस्तकों की कई अलमारियाँ हैं, और मैंने उन चीजों की गहराई तक नहीं पहुँचाया है, और मुझे नहीं लगता कि उन्होंने इसे अपनी सोच में पर्याप्त रूप से शुरू किया या शामिल किया।

चौथा। विडंबना यह है कि जब फ्राइसन अपने सिद्धांत के मूल में आते हैं, निर्णय लेने की कार्यप्रणाली के रूप में बुद्धिमत्ता, तो वे व्यक्तिपरकता के इस रूप पर वापस लौट आते हैं। बुद्धिमानी से काम करें।

आध्यात्मिक रूप से उचित कार्य करें। उनका तीसरा सिद्धांत यह है कि परमेश्वर की कोई आज्ञा नहीं है; परमेश्वर हमें चुनने की स्वतंत्रता देता है। और यह कैसे होता है? परमेश्वर हमें चुनने की स्वतंत्रता कैसे देता है? खैर, वह हमें अपनी सीमाओं के भीतर चुनने की स्वतंत्रता देता है, जो हम

जानते हैं उसकी सीमाएँ, हमारी पतित प्रकृति की सीमाएँ, यह सुनिश्चित करने की सीमाएँ कि हम ईश्वर के विरुद्ध न फँसें।

बहुत सी सीमाएँ हैं। स्वतंत्रता पूर्णतः मुफ्त नहीं है। और हमें इस मामले में बहुत सावधान रहने की ज़रूरत है, कहीं ऐसा न हो कि हम किसी निहित या रचनात्मक निर्माण, परमेश्वर के वचन से उसके बारे में एक दृष्टिकोण का पूरी तरह से उल्लंघन कर दें, जो हमें उस दिशा से अलग दिशा में ले जा सकता है जिसे हम स्वतंत्र मानते हैं।

और यह कैसे होता है? अपने दूसरे संस्करण में, वह मूल संस्करण की तुलना में इस बारे में बहुत अधिक व्यक्तिपरक है। तो, आप देख सकते हैं, आधार की कमी, मैं उन्हें बस खारिज कर दूंगा। मुझे लगता है कि वे केसविक आंदोलन, पूर्ण रूप से अनियंत्रित व्यक्तिपरकता का पुनर्कथन मात्र हैं।

स्मिथ, मैं उनका सम्मान करता हूँ। मुझे उनकी सामग्री पढ़ना पसंद है। मैं उनसे बहुत कुछ सीखता हूँ, लेकिन मैं उनके जितना आगे नहीं जा सकता।

लेकिन वह खुद भी इस बात को लेकर सतर्क रहते हैं कि वह व्यक्तिपरक क्षेत्र में कितनी दूर तक जाते हैं। और फ्रेजर के साथ, मैंने बहुत कुछ हासिल किया है। मैंने बहुत कुछ हासिल किया है।

मुझे दशकों पहले ही इसकी शुरुआत करने की प्रेरणा मिली थी, इससे पहले कि मैं ईश्वर की इच्छा पर कोई किताब लिखूँ और मैंने कई, कई, कई साल पहले ये व्याख्यान दिए हैं। मुझे लगता है कि 30 या 40 साल पहले, कहीं न कहीं उस सीमा के आसपास, लेकिन इससे ज़्यादा नहीं। यह किताब 70 के दशक में आई थी।

मैंने 73 से लेकर, माफ़ कीजिए, 61 तक पढ़ाया। मुझे अब यह भी याद नहीं कि मैंने खुद को क्या पढ़ाया। यह शुरुआती दौर था, ठीक है, यह 79 से 83 था, दरअसल, क्योंकि मैं उस दौरान अपना शोध प्रबंध लिख रहा था।

और इसलिए मैं उस समय वहाँ था। उनकी किताब 78 में आई थी। तो, हम दोनों एक ही युग के हैं।

और मैंने उस समय इसका बहुत ज़्यादा इस्तेमाल किया। जैसे-जैसे समय बीतता गया, मैंने अपने विश्वदृष्टिकोण और मूल्यों का निर्माण करना शुरू किया, जो मुझे लगता है कि हमें एक बेहतर दिशा, एक अधिक परिभाषित दिशा, एक अधिक वस्तुनिष्ठ दिशा में ले जाता है, और फिर भी एक ऐसी दिशा जो हमें परमेश्वर के वचन के संदर्भ में अधिक से अधिक की आवश्यकता होती है, जिस पर कुछ लोग आपत्ति करते हैं। मुझे नहीं पता कि आप इस पर कैसे आपत्ति कर सकते हैं।

मैं इसे समझ सकता हूँ। आप ईमानदार हो सकते हैं। बहुत से लोग पादरी की तरह अध्ययन नहीं कर सकते, अगर पादरी अध्ययन करता है।

बहुत से लोग शास्त्रों को अच्छी तरह से समझने के लिए ज़रूरी शिक्षा प्राप्त नहीं कर पाते। लेकिन हर कोई सीख सकता है। अगर आप सीखने वाले नहीं हैं, तो आप आगे नहीं बढ़ पाएँगे।

और हर कोई अपने जीवन में, अपनी परिस्थितियों में, ए से जेड तक जा सकता है, अगर आप ऐसा करने के लिए तैयार हैं। और आपको भी मदद मिलनी चाहिए। यहीं पर व्यावसायिक मंत्री आते हैं, और उम्मीद है कि वे वह मदद प्रदान कर सकते हैं।

इसलिए ब्लैक लेबल मॉडल, अपने धर्मनिष्ठ पूर्ववर्तियों की तरह, नेकनीयत तो है लेकिन अपर्याप्त है, यहाँ तक कि दोषपूर्ण भी है। यह मॉडल मान्यताओं के एक सेट से लेकर ईश्वर के संचालन के कम-से-कम पेशेवर धर्मशास्त्रीय मॉडल तक पहुँच जाता है। बाइबल का लगभग हर स्तर पर दुरुपयोग किया गया।

ब्लैक लेबल मॉडल सोचता है कि यह ईश्वर का सम्मान कर रहा है, जबकि वास्तव में यह ठोस बाइबिल धर्मशास्त्र को कमजोर कर रहा है। स्मिथ व्यक्तिपरकता के प्रभाव को बहुत कम कर देता है। उनका लेखन भी ईमानदारी से व्यक्तिपरकता के संघर्ष को उजागर करता है।

मानवीय स्तर पर पूर्ण निश्चितता के बिना कोई व्यक्ति अधिकारपूर्वक कैसे कार्य कर सकता है? तर्क चर्चा को अच्छी दिशा में ले जाता है, लेकिन वास्तव में ऐसा मॉडल प्रदान करने में विफल रहता है जो प्रश्न से लेकर समाधान तक तर्क की रेखाओं को प्रदर्शित कर सके जो तर्क की वैध रेखाएँ हैं। उन्होंने तर्क की रेखाओं का आलोचनात्मक अध्ययन किया है, न कि केवल पाठ का सतही अध्ययन किया है। इसके लिए और अधिक की आवश्यकता है।

अब, नंबर एक, मैं कुछ चीजों के बारे में क्या सोचता हूँ? पतन के प्रभाव और परिणामस्वरूप मन का अंधकारमय होना इनमें से किसी भी दृष्टिकोण में पर्याप्त रूप से शामिल नहीं है, सिवाय इसके कि स्मिथ ने इसका उल्लेख किया है। पतन के नोएटिक प्रभाव को कैसे संबोधित किया जाता है? हम गिरे हुए लोग हैं। हम गिरते हुए लोग हैं।

और हमें इस पर ध्यान देना होगा। और इसका समाधान करने का एकमात्र तरीका हमारे प्रश्नों के संबंध में पवित्रशास्त्र को बहुत सावधानी से खोलना है। ब्लैकबी लेबल मॉडल में, पवित्रशास्त्र का उपयोग सिद्धांत की अवधारणा के रूप में किया जाता है।

यह एक ऐसा शब्द है जिसे बाइबल धर्मशास्त्र में इस्तेमाल किया गया था। इसका मतलब है कि आप अपनी अवधारणाओं को लेते हैं और उन्हें सिद्धांत में बदल देते हैं। आप बाइबल को बताते हैं कि वह क्या कह रही है, बजाय इसके कि बाइबल आपको बताए।

यह बहुत बड़ा अंतर है। आलोचनात्मक सोच के बजाय प्रमाण, पाठ, ढंग। इसके लिए काम की ज़रूरत होती है।

इसके लिए नेतृत्व की आवश्यकता है जो इस तरह का काम करे और इस प्रक्रिया में उनके सम्मेलनों की मदद करे। मुझे लगता है कि हम बहुत हद तक असफल रहे हैं। व्यक्तिपरक परंपराओं में, शास्त्र बहुत छोटा है।

यह बहुत छोटा है। बाइबल एक बहुत बड़ी किताब है और अगर हम इसे पढ़ने के लिए समय और प्रयास करें तो यह हमारे सवालों का जवाब दे सकती है। चौथा, फ्रिसन की व्यक्तिपरक परंपराओं की आलोचनाएँ अच्छी तरह से स्थापित हैं, लेकिन पवित्रशास्त्र के मार्गदर्शन के बारे में उनकी अपनी अंतर्दृष्टि अदूरदर्शी है।

उन्होंने निश्चित रूप से इसका उल्लेख किया है। उन्होंने कुछ उदाहरण भी दिए हैं, लेकिन उन उदाहरणों में तर्क की रेखाओं से पर्याप्त संबंध नहीं हैं। वास्तव में, कुछ पाठ सतह से परे व्याख्यात्मक भी नहीं हैं, और यह एक खराब उदाहरण बन जाता है।

दार्शनिक, धार्मिक और व्याख्यात्मक रूप से, बहुत काम किए जाने की आवश्यकता है। कुछ बिंदु पर, फ्राइसन खुद व्यक्तिपरकता की ओर लौटते हैं, विशेष रूप से ज्ञान के साथ, क्योंकि उनका मॉडल ज्ञान क्या है, इससे निपटने के लिए कोई प्रतिमान प्रदान नहीं करता है। मैं बाइबल के पाठ से ज्ञान का तर्क कैसे दे सकता हूँ? हम उन प्रत्यक्ष, निहित निर्माणों के बारे में भी बात करते हैं जो इसे संबोधित कर सकते हैं।

इससे हमारे आलोचनात्मक विश्वदृष्टिकोण को विस्तार देने में मदद मिलती है। श्री व्यूज़ वॉल्यूम वास्तव में धार्मिक परंपराओं का केवल एक छोटा सा हिस्सा ही दर्शाता है, यहाँ तक कि अमेरिका में भी। वे ब्लैकबी-केसविक आंदोलन को शामिल करते हैं, वे वेस्लेयन और क्रिश्चियन मिशनरी एलायंस समूह को शामिल करते हैं, और वे फ्राइसन को शामिल करते हैं।

खैर, प्रेस्बिटेरियन वहाँ नहीं हैं, रिफॉर्म वहाँ नहीं हैं, एंग्लिकन वहाँ नहीं हैं। कितने लोग वहाँ नहीं हैं? और फिर भी, इसे हमारे अमेरिकी ईसाई संस्कृति में भगवान की इच्छा के बारे में सोचने के तरीके के रूप में प्रस्तुत किया जाता है। ऐसा नहीं है।

इन परंपराओं का कोई प्रतिनिधि नहीं है, इसलिए उस पुस्तक को हमारी ज़रूरतों के हिसाब से तौला जाता है। और मैं रोमियों 12, 1, और 2 को इनमें से किसी भी चीज़ में बहुत प्रमुख नहीं पाता हूँ। रोमियों 12, 1, और 2, परिवर्तित मन और मूल्य प्रणाली का विकास, और पवित्रशास्त्र के सावधानीपूर्वक अध्ययन के माध्यम से उस पर निर्णय लेना, मेरी राय में, बाइबल इन चीज़ों को मॉडल बनाती है।

यह ज़्यादातर नेताओं के लिए आदर्श है। प्राचीन इसराइल की तरह, इसराइली लोग सीधे भगवान के पास नहीं जाते थे। वे भगवान से प्रार्थना कर सकते थे, जैसे, आप जानते हैं, यह रोमन कैथोलिक की तरह नहीं था जहाँ पुजारी और पैगंबर ऐसे होते थे।

लेकिन सच तो यह है कि वे राष्ट्र के भीतर ईश्वर के प्रवक्ता के पास ज्ञान प्राप्त करने के लिए गए थे। लेकिन उन्होंने जाकर यह नहीं पूछा कि मुझे किस तरह की गाड़ी खरीदनी चाहिए? शेवरले गाड़ी, या फोर्ड गाड़ी, या डॉज गाड़ी। बस कुछ अच्छे सामान्य ज्ञान का उपयोग करें, या आप चुनने के लिए स्वतंत्र हैं।

लेकिन फिर भी आपके पास उस तरह से मूल्य है क्योंकि मैं शेवरले खरीदता हूँ क्योंकि मैं फोर्ड खरीदने के लिए भारी कर्ज नहीं लेना चाहता और बहुत ज़्यादा कर्ज में नहीं पड़ना चाहता। और इसलिए, आपके पास हमेशा ऐसे मूल्य होते हैं जो आपके निर्णय लेने के तरीके में शामिल होते हैं। ठीक है, नेताओं का विश्वदृष्टिकोण और मूल्य मॉडल।

नेताओं ने एक बाइबिल आधारित, दार्शनिक और नैतिक मॉडल बनाने का प्रयास किया है जिसके द्वारा चर्च ने निर्णय लिए हैं, खासकर तब जब बाइबिल से कोई प्रत्यक्ष शिक्षा नहीं मिलती है। मैंने उस खंड को बड़े पैमाने पर चर्च में शामिल किया है। वेस्लेयन चतुर्भुज का उपयोग कई संप्रदायों द्वारा किया जाता है।

यह माना जाता है कि इस दृष्टिकोण में केवल एक ही चीज़ को नजरअंदाज किया जाता है, वह है अनुभवात्मक स्रोत आइटम। लीडर का मॉडल बाइबल अनुवादों को पढ़ने और बाइबल कैसे सिखाती है, इसके संबंध में मुद्दों को क्रमबद्ध करने के लिए प्रतिमान प्रस्तुत करता है - ये दो मॉडल हैं।

ये प्रतिमान हमें उन मुद्दों के बाइबिल विश्लेषण के माध्यम से ले जाते हैं जिनका हम सामना करते हैं। आप जानते हैं, हम कई बार सभी बाइबिल अनुवादों के बारे में शिकायत करते हैं, लेकिन अगर आप उनका उपयोग करना सीख जाते हैं, तो वे एक आशीर्वाद हो सकते हैं क्योंकि वे आपको दिखाते हैं कि आपको कहाँ सोचने की ज़रूरत है, क्योंकि आप संस्करणों के बीच अंतर देखते हैं, कभी-कभी बड़े अंतर।

तीसरा, बाइबिल के विश्वासियों को आम तौर पर प्रत्यक्ष शिक्षण विवरण से परे निर्णय लेने की आवश्यकता होती है।

हम जो भी निर्णय लेते हैं, उनमें से अधिकांश को प्रमाण पाठ द्वारा संबोधित किया जाता है। अब, स्पष्ट नैतिक आदेश, बाइबल की अनिवार्यताएँ, जैसा कि हम उन्हें साझा करते हैं, बहुत आसान हैं, लेकिन जो चीज़ें कठिन हैं, वे ऐसी चीज़ें हैं जिनके लिए अधिक गहन प्रतिमान की आवश्यकता होती है। स्वतंत्रता वह नहीं है जो आप उचित समझते हैं।

बल्कि, यह आत्मा के हिसाब से सीमित और सीमित है। हमारी सोच कई कारकों से प्रभावित होती है। हमारी स्वतंत्रता हमारी प्रकृति से संबंधित है।

हमारे पास तर्क की ऐसी रेखाएँ होनी चाहिए जो यह स्पष्ट करें कि हम कोई निर्णय क्यों ले रहे हैं। और ये ऐसी बातें होनी चाहिए जिन्हें समझाने में हमें विश्वास हो। और यह उस तरह के बाइबल अध्ययन का परिणाम है जो हमें करना है।

हमें अपने दृष्टिकोण के प्रति सचेत रहना चाहिए। हम सभी के पास धार्मिक मान्यताएँ होती हैं। मैंने अपने आरंभिक भाग में आपको उनके बारे में थोड़ा विस्तार से बताया था।

मेरे पास वे हैं। मैं अन्य चीजों के लिए खुला रहने की कोशिश करता हूँ। मैं गॉर्डन स्मिथ के लेखन की बहुत सराहना करता हूँ, जो बिल्कुल मेरे जैसा नहीं है, लेकिन यह मुझे और अधिक खुला होने और जीवन के अनुभवात्मक पक्ष के संदर्भ में खुद को सुनने के लिए प्रेरित करता है।

लेकिन दिन के अंत में, जैसा कि यशायाह ने कहा, कानून और गवाही के लिए। अगर यह मिश्रण में नहीं है, तो हमारे पास जाने के लिए कोई जगह नहीं है। यह आखिरी हिस्सा मेरा संक्षिप्त विवरण था।

बाइबल में बुद्धि, नंबर चार, एक अनूठी साहित्यिक शैली है। इसका अधिकांश हिस्सा बाइबल की मानसिकता का उत्पाद है। पवित्रशास्त्र, नीतिवचन और अन्य ज्ञान शैलियों को उद्धृत न करते हुए, हम टोरा को उद्धृत नहीं करते हैं।

हम इसके विकास में इसकी शिक्षा पर विचार करते हैं। और यह एक ऐसा क्षेत्र है जिसमें मैं बहुत अधिक काम करना चाहता हूँ। मैं उस साहित्य को पढ़ना चाहता हूँ।

मैं यह बताना चाहता हूँ कि टोरा के बारे में उनके मन में क्या था जिसे वे खोल रहे थे। कभी-कभी, वे संबंध अपेक्षाकृत स्पष्ट हो सकते हैं, लेकिन वे आपको यह नहीं बताते कि वे संबंध क्या हैं। और हमारे लिए, हम भी यही कर रहे हैं।

हम शास्त्रों और उनके विश्वदृष्टिकोण और मूल्यों को ले रहे हैं, और हम उन्हें किसी ऐसी चीज़ पर लागू कर रहे हैं जिसका बाइबल सीधे तौर पर उल्लेख नहीं करती है। और हम उस विश्वदृष्टिकोण को लाने और उस सेटिंग में लागू करने की कोशिश कर रहे हैं। इसके लिए कुछ विचार करने की ज़रूरत है।

बुद्धि एक अनूठी साहित्यिक विधा है। यह बाइबिल की मानसिकता का उत्पाद है। बाइबिल की बुद्धि बाइबिल के विश्वदृष्टिकोण और मूल्यों की मानसिकता से संतृप्त होने का एक उत्पाद है।

आपकी संतृप्ति आपका अनुभव नहीं है। आपकी संतृप्ति आपके अध्ययन का उत्पाद है। बुद्धि वास्तव में शास्त्र में ज्ञान का एक रूप है।

बुद्धिमानी से काम करने के लिए क्यों, क्यों, क्यों का स्पष्टीकरण आवश्यक है। यह बुद्धिमानी है कि आप बिना किसी निर्धारित कारण के सिर्फ वही न करें जो आपको सबसे अच्छा लगता है। तो यह बुद्धिमानी क्यों है? अगर आप यह नहीं समझा सकते कि आप अपने निर्णय के लिए शास्त्र से समझ की रेखाएँ नहीं दिखा सकते और यह नहीं जान सकते कि यह प्रत्यक्ष है, निहित है या रचनात्मक है, तो आप बुद्धिमान नहीं हैं।

अब मैं जानता हूँ, और मैं कुछ हद तक दर्दनाक रूप से जागरूक हूँ, कि मैंने इसके लिए एक बहुत ही ऊँची सीमा निर्धारित की है। लेकिन भगवान की सीमाएँ हमेशा बहुत ऊँची होती हैं, है न? तो, चौथा तत्व, जो मेरा है, मुझे लगता है कि अधिक उत्कृष्ट तरीके से। भगवान की इच्छा को जानना आपके विश्वदृष्टिकोण और मूल्यों को जीवन में लिए जाने वाले निर्णयों पर लागू करने की एक प्रक्रिया है।

आज अमेरिकी संस्कृति में जो बात मुझे परेशान करती है, और शायद अन्य संस्कृतियों में भी यही समस्या है, वह यह है कि जब बाइबल की बात आती है तो हमारे पास एक अनपढ़ चर्च है। हमारे पास एक अनपढ़ चर्च क्यों है? बेशक, हर कोई प्रमुख नैतिक बातों को जानता है। यह कोई दिमाग लगाने वाली बात नहीं है।

आप बिना सोचे समझे ही उन्हें पकड़ लेते हैं। लेकिन हमारे पास एक अनपढ़ चर्च है, और मैं यहाँ पर निर्णय देने जा रहा हूँ क्योंकि हमारे पास एक अनपढ़ पादरी है। जीवन के निर्णयों में चर्च को सलाह देने के लिए जिम्मेदार व्यक्ति उन लोगों पर निर्भर करते हैं जिन्हें मण्डली में उपदेश देने, सिखाने और नेता बनने के लिए बुलाया जाता है।

न केवल अनुभव के नेता, और न केवल भजन और अंतहीन कोरस के नेता, और न ही मुझे अच्छा महसूस कराने के अलावा कोई धार्मिक विषय-वस्तु रखते हैं। हमें ऐसे नेताओं की ज़रूरत है जो शास्त्र, भाषा, धर्मशास्त्र और इतिहास से संबंधित हर चीज़ में पर्याप्त रूप से और पूरी तरह से प्रशिक्षित हों ताकि वे उस ज्ञान को मण्डली में ला सकें और लोगों को जीवन की चुनौतियों का प्रबंधन करने में मदद कर सकें। फिर भी, हम बाइबल को अमर बनाते हैं।

हम हर अनुच्छेद में एक ही बात कहते हैं जब हम इन अलग-अलग अनुच्छेदों का अर्थ समझने में चूक जाते हैं। कुछ लोगों को एक किताब को पढ़ने में महीनों लग जाते हैं, इसलिए नहीं कि हम किसी किताब के बारे में कुछ सीख रहे हैं, बल्कि इसलिए कि हम पाठ में पढ़े गए शब्दों में शब्द संगति और सुझाव के ज़रिए पूरी बाइबल समझ रहे हैं। और आप बिना पूछे उसी विषय पर वापस चले जाते हैं, कि उस लेखक ने क्या लिखा और वह लेखक हमें क्या संदेश देना चाह रहा था? इसलिए, हमने व्यक्तिपरकता को उस तरह की ईसाई धर्म को नष्ट करने दिया है जो शुरुआती अमेरिका में देखा गया था और जिसकी इंग्लैंड में थोड़ी बेहतर अवशिष्ट प्रकृति है।

लेकिन अमेरिकी कठोर व्यक्तिवाद और स्वतंत्रता की हमारी अवधारणा और चर्च में जाना ठीक है, बाकी सब अपने आप ठीक हो जाएगा। नहीं, ऐसा नहीं होगा। इसलिए, कृपया, परिवर्तित मन को गंभीरता से लें और सोचें कि आप कैसे बदल रहे हैं और यह आपके विश्वदृष्टिकोण और मूल्यों को कैसे बदलता है, उन्हें उचित चैनलों में निर्देशित करें, जिन्हें आप अपने सामने आने वाले निर्णयों से निपटने के लिए बुला सकते हैं।

ये व्याख्यान अंतर्राष्ट्रीय हैं। मुझे यह भी नहीं पता कि AI ने इसे किस भाषा में प्रस्तुत किया है और आप क्या सुन रहे हैं। आप जो कुछ भी कर सकते हैं, करें।

और भगवान हमारी सीमाओं को जानते हैं। हम सभी एक या दूसरी तरह की सीमाओं के साथ जीते हैं, कुछ की सीमाएँ दूसरों से ज़्यादा होती हैं, या तो हमारी संस्कृति में या फिर खुद में। मेरे कुछ दोस्त हैं जो मेरी तुलना में ज़्यादा किताबें लिखते हैं, और मुझे इस बात से थोड़ी जलन होती है क्योंकि यह मेरी खासियत नहीं रही है। मैं चाहता हूँ कि ऐसा हो, लेकिन मैं जो हूँ, उससे अलग नहीं हो सकता।

और मैंने इस पर कड़ी मेहनत की है। मैंने कुछ चीजें की हैं, बहुत सारी, लेकिन वह नहीं जो मैं करने में सक्षम होना चाहता था। हम सभी इसे समझना चाहते हैं।

लेकिन उन इच्छाओं को केवल अध्ययन करके संबोधित किया जा सकता है ताकि आप खुद को एक कर्मचारी, एक कार्यकर्ता के रूप में दिखा सकें, जिसे शर्मिंदा होने की आवश्यकता नहीं है। पॉल ने तीमुथियुस को संबोधित किया। अब, तीमुथियुस एक व्यावसायिक ईसाई कार्यकर्ता था, जैसा कि पॉल था।

हर कोई ऐसा नहीं है, लेकिन फिर भी आपको उस पाठ की भावना को अपनाना चाहिए और खुद को ईश्वर के लिए स्वीकृत दिखाने, बेहतर निर्णय लेने और अपने पुराने ईसाई से बेहतर नेता बनने के लिए अध्ययन करना चाहिए। ईश्वर हम सभी की इस तरह से सहायता करे और हमें न केवल ऐसा करने की शक्ति दे बल्कि निश्चित रूप से ईश्वर का वचन हमें दे ताकि हम दुनिया

में अपने ईसाई मिशन में आगे बढ़ने में सफल हो सकें। ईश्वर आपको आशीर्वाद दे।